स्वावाचा गमंडपमागत्य [illegible] पादौ प्रक्षाल्याचमेत् यथा ॐ केशवायनमः ॐ नारायणा
यनमः ॐ माधवायनमः त्रिर्जलं पीत्वा ॐ गोविंदायनमः ॐ विष्णवे नमः हस्तौ
प्रक्षाल्य ॐ मधुसूदनायनमः ॐ त्रिविक्रमायनमः द्विरोष्ठौ प्रक्षाल्य ॐ वामनाय
नमः ॐ श्रीधरायनमः इति मुखं ॐ हृषीकेशायनमः हस्तौ ॐ पद्मनाभायनमः पादौ
दामोदरायनमः मूर्द्धानं प्रक्षालयेत् ॥ न्यासः ॐ संकर्षणायनमः मुखे ॐ

ग ९ १

ॐ श्रीगणेशायनमः श्री
रामायनमः अथ हवारप
जा पहले उराजेदा एजन
करणा इसका ग्रंथ कहे
है नहाय करके एजावा
ले यार आउणा पैर धो
य करके तीन आचमन
करणा फट् इस बीजसे
उराजा सिंचनकरणा उ
परकीशाखा गंगणेशा
यनमः उराजेदा दहना

रागास्त्रा [illegible] नपनेयथा
[illegible] कार्यसाधका [illegible]
इत्युक्त्वा फट् इति पा
त्रं प्रक्षाल्य नमः इति
जलेनापूर्य ॐ गंगे
च यमुने चैव गोदाव
री सरस्वती नर्मदे
सिंधुकावेरी जलेऽस्मिन्
सन्निधिं कुरु इति
तीर्थान्यावाह्य ॐ म
इति गंधपुष्पैरभ्यर्च्य
वं इति धेनुमुद्रयामृ
तीकृत्य [illegible]
यनमः इति मंत्रेण
[illegible] मंत्रयेदिति
फट् इति द्वारं प्रोक्ष्य
[illegible] ॥१॥

वासुदेवायन
मः ॐ प्रद्युम्ना
यनमः नसोः
ॐ अनिरुद्धायन
मः ॐ पुरुषोत्त
मायनमः इ
[illegible]
ॐ अधोक्षजाय
नमः ॐ
नृसिंहायनमः
करणौ ॐ
अच्युतायन
मः नाभिं ॐ
जनार्दनायन
मः हृदये ॐ
उपेन्द्रायनमः
शिरः ॐ हर
येनमः ॐ वि
ष्णवेनमः स्कंधौ
स्पृशेदिति वैष्ण
वाचमनम् ॥
[illegible]
स्मायनमः यथा
ॐ [illegible]
[illegible]
फट् इति प्रक्षा
ल्य

यार धोना श्रीमहालक्ष्मै
नमः वाम यारधोना पै
सरस्वत्यैनमः फिर दह
ना सिवना गंगणेशाय
नमः ॐगंगायैनमः ॐ
यमुनायैनमः फेर वाम
भाग सिवना धोना द्वार
का ॐक्षेत्रपालायनमः
ॐगंगायैनमः ॐसमुद्रा
यैनमः ॐयमुनायैनमः
दोनो मंत्रो वामे पासे ना

ग सकोऐं फेरदहनेपास
९ न्यासकोऐं ॐधात्रेनमः
२ फेरवामेपासेन्यासकोऐं
2 ॐविधात्रेनमः फेरदह
ने न्यासकोऐं ॐशेवनि
धयेनमः फेरखवेपास
न्यासकोऐं ॐपद्मनिधये
नमः इसमंत्रसे फेर दह
ने न्यासकोऐं ॐनंदनाय
नमः १ ॐसुनन्दायनमः
२ ॐचंडायनमः ३ ॐप्र·

अपविघ्नोत्सारणं। दिव्यदृष्ट्यावलोकनेन दिव्यान् अर्घ्यजलाभिषेकेन नाभसान् पार्ष्णि
घाताभिघातेन भौमान् ६

वेंद्रायनमः वारों मेद्रोमे
फेर खिबे पासे न्यासकके
ॐबलायनमः ॐप्रबला
यनमः ॐभद्रायनमः ॐ
सुभद्रायनमः इतिद्वारपू
जा ॐअपसर्पन्तुते भूता
ये भूता भुविसंस्थिता ये भू
ता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु
शिवाज्ञया अपक्रामन्तु
भूतानि पिशाचाः सर्वतो
दिशं सर्वेषामविरोधेन

रा ब्रह्मकर्म समारम्भे २ देवमे
ए त्रपटके वामपासेदा नर
१ संकोचकरे सने पेरकैं
3 एजावाले स्थानपा वेहना
ॐ लेखपालायनमः ॐ वि-
धात्रेनमः इनो मंत्राककैं
देवपाल विधाताका पूज
नकरणा दर्भहरिणेदा
खिलड़ा विछाना ॐनमः
स्दर्पणाय ब्रह्मणेफट्
इस मंत्रककैं ब्रमृटे ग्रह

तर्जनीका शङ्खकरणा इस
का नाम दिग्बंधन है सद
र्शनचक्र तेजककै अपने
चारो तरफ अग्नीका कोट।
चितेना चिंतनककै भूत
शुद्धिकों करे पहले प्राणा
याम करणा ।इसबीज
ककै वनरी वारी वामी
नासा ककै प्राण फराने
वउट वारी कुम्भक प्राणा
याम करणा सोहंवारी ३

१
१
५

स मेरुकके रेचक प्राणाया
म करणा ऐसे प्राणाया
म करके विसतंतु निभां
विद्युत्प्रभां कुंडलिनी ध्या ।
येत् मूलाधार गुदास्थान
विषें कमलोंकी जडोंको
तंतु श्वेतवर्ण जिसका
प्रह बिजली जैसा प्रका
स ऐसी कुंडलिनीको ।
स्वरूपका ध्यानकरे ति
सके उपरंत मूलाधारसें

कुंडलिनीको उठाकरके ।
हृदयमे लावे तहां जीवके
साथ कुंडलिनीको मिला
करके जीव सहित कुंड
लिनीको सुषुम्ना मार्गक
रके ब्रह्मरंध्रको लेजावे
फेर सोहं हंसः इसमंत्रक
रके जीवसहित कुंडलि
नीको ब्रह्मविषे योजना
करे तिसके बाद पैरोंसे
से जानुपर्यंत लं इसवी

ग
१
५
5

न करके शुक्ल चारोंकोणों
वाला वज्रसहित पद्मभन
घ्राण नासिका गुणगंध व
ला निवृत्ति समान वायुक
रके शुक्ल पृथ्वी मंडलका
चिंतन करणा जान्वा
थोड़ा लेकरके नाभिपद्मे
न वं बीज करके शुक्ल श्वे
त वर्ण अर्धचंद्रमा जैसा
आकार हस्त ग्रहणकरें
द्रिय रसना रसेंद्रिय वि घ्रु

प्रतिष्ठा उदान वायु करके
युक्त दो कमलों करके वि
क्षित ऐसे जल मंडलका
चिंतनकरे नाभीसे लेक
रके हृदयपर्यंत वं इस।
बीज करके युक्त त्रिकोणा
कार पायु विसर्ग नेत्र रूप
शिवा विद्या कलिका।
व्यान वायु सहित चउबी
दलोंकरके युक्तलालव
र्णवाला ऐसे अग्निमंडल।

१९८ कोचिंतनकरे हृदयादि ह
दयसे भ्रूमध्यपर्यंत गोला
कार छेबिंदु ग्रंकरके वि
ङ्कित यं इस बीजकरके यु
क्त उपस्थानेद त्वचा स्पर्श
ईशान शांति अपान वायु
करके युक्त धूम्रवर्ण ऐसे
वायुमंडलको चिंतनकरे
भ्रूमध्यसेलें ब्रह्मरंध्र पर्यं
त गोलाकार नीलवर्ण
है हंसबीज करके युक्तवा

6

क वचन श्रोत्र शब्द सदा।
शिव शांतपतीता कलिका
प्राण वायुकरके शुक्ल आ
काश मंडलको चिंतनक
रे। तिसके बाद पृथ्वीको
जलविषें मेलदेना जल।
को अग्निविषें मेलदेना
अग्निको वायुविषें मेलदे
ना वायुको आकाँशविषे मे
लदेना आकाशको अहं
कारविषें अहंकारको म

१९७

हतत्वविषे मिलाना महत
त्वको प्रकृति विषे मेलदेना
प्रकृतिको आत्माविषे ली
नकरणा ततः दक्षिणअंगे
अंगुष्ठमात्रे कृष्णवर्णे विप्र
हत्या शिरस्कंच कनक
स्तेय बाहुकं मदिरापान
हृदयं गुरुतल्प कटीयुतं
तत्संसर्गी पदद्वंद्वं उपपात
क रोमकं खड्गचर्म धरं क्रू
रं अधोवक्त्रं सुदुःसहं पा।

पशुरूपं ध्यायेत् तिसका
वाट सजी वली विषे अंग्
है जितना प्रमाण जिसका
सिर है और मदिरा पीना
सोई जिसका हृदय है अ
रु गैंडी शय्याविषे सोना
सोई जिसका लक्ष है और
तिसका संसर्ग जो है सोई
जिसके पैर हैन सब उपा
पातक जिसके रोम है औ
र तरवाल फाल पर धार

ग ण करे है अरु कठोरचित्त
५ और नीचेमोह जैसा उःस
८ हजो पापपुरुष तिसका
8 ध्यानकरणा तिसके बाद
यं इस बीजका चिंतन कर
के ३२ बत्तीवारी रं इस बी
जका जप करके बायुको
पूरण करके पापपुरुष
को सुकादेना और रं इस
बीजका ६४ चउठवारी जप
करके आपने देहविषे जो

जालदेना

पाप पुरुष तिसकों १९ सो ओवारी जपकरके। भस्म कीना होपया जो पापपु। रुष तिसको रेचक प्राणा याम करके देहसे बाहिर निकालदेना है। आकाश बीजका जपकेके सारे ओ गेकके देहबनाना माथेसे लेकर सभअंग देह देवता प लेने सोहं मंत्रककें जी वको हृदयरूपी कमल

ओर इसके बाद यं इस बीजकों

ग
१
५
9

विषें लेघ्राउणा जीवात्मा:
से अंउलीको किनारेकर
कै गुदाविषें रखीटणा फे
रहृदयविषे ह्याथ रखणी
श्रोंह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं
सं हों ॐ क्षं सं हं सः ह्रीं
श्रों हं सः ममप्राणा इहप्रा
णाः श्रों ह्रीं क्रों यं रं लं वं
शं षं सं हों श्रों क्षं सं हं सः
ह्रीं ॐ हं सः ममजीव इह
स्थितः इसककें हृदयविषें

हाय रष लेना आं ह्रीं क्रों
यं रं लं वं शं षं सं हों ॐ
क्षं सं हं सः ह्रीं ॐ हंसः मम
सर्वेंद्रियाणि वांमन स्त्वक्चक्षुः
श्रोत्र त्वक चक्षु जिह्वा घ्रा
ण वाक पाणि पाद पायू
पस्थान इहै वागत्य सुखं।
चिरं तिष्ठंतु स्वाहा ॐ क्षं
सं हं सः ह्रीं ॐ इति प्राण
प्रतिष्ठा ॥ अथ राममंत्र।
न्यासः अस्य श्री षड क्षरी

मंत्रस्य वाल्मीकऋषिः गाय
त्रीछंदः रामोदेवता राम
प्रीत्यर्थे विनियोगः इसक
रके शिरविषे स्पर्शकरणा
इससे मुखस्पर्श करणा इ
स करके हृदयस्पर्श कर
णा इस रां मंत्रसे अंगुष्ठसे
तर्जनीको मिलाना इस रीं
मंत्रसे तर्जनी अंगुष्ठ मिला
ना इस रूं मंत्रसे मध्यमा ।
अंगुष्ठ मिलाना इस रैं मंत्र

से अनामिका अंगूठ मिला
ना इस रीं नेत्रसें कनिष्ट
का अंगूठमिलाना इस क
रके रः उलटा सीधा हाथ
का स्पर्शकरण इससें रीं
हृदयमें हाथलाना इस
सें रीं शिरमें हाथलाना
हः इससें शिखाका स्पर्शक
रणा रैं इसकरके दोनों
भुजोंका स्पर्शकरण रैं
नेत्रोंमें हाथ लगाना रः

ग इसकरके हाथमें हाथका
१ शब्दकरणा ततःपंचाङ्ग
॥ न्यासः ब्रह्मरंध्रे ॐनमः इस
करके तालूदा स्पर्शकरणा
भ्रुवोमध्ये ॐनमः इससे भ
वोंयोंके मध्यविषे हाथला
ना हृदि ॐनमः इसकर
के हृदयमें हाथलाना ना
भौ ॐनमः इसकरके नाभि
विषे हाथलाना लिंगे ॐ
नमः इस करके लिंग स्प

शंकराणा पादयोः मेंनमः
इस करके पादस्पर्शकराणा
येंनमः दहने मम्मेकी हा
थलाना मेंनमः बाममम्मे
की हाथलाना येंनमः इस
से स्तनोके मध्यमे हाथला
ना इति बीजन्यासः ॥
अस्त्रतालिनं आधारे मूले
जपन् मंवह्निमंडलाय द
शकलात्मने रामचंद्राय अ
पात्रासनायनमः इसकेके

ग
ष
१२

शंखपात्रके ऊपर अक्षतको
डाने इति आधारे त्रिकोणे ।
स्थापयेत् अथ शंखपात्रके
12 त्रिकोणयंत्रके ऊपर रखदेणा
गंधादिभिः संपूज्य फेर गंधा
दिकके पूजन करणा ततः
क्लीं ॐ क्लीं महाजलचराय
हुंफट्स्वाहा पांचजन्याय न
मः इसमंत्रकके शंखदा प्र
क्षालन करणा तिस ऊपर
शंखरखणा शंखस्थमंडलाय

द्वादशकलात्मने रामचंद्रा॰
ष्टपात्रायनमः इतिसेपूज
इस मंत्रकर्के शंखेदा पूजन
करणा विलोममात्रकोंवन्
ले विलोमंच पठन् शंखेज
लै राष्ट्यो पूजयेत् विलोम
मात्रका का प्रकारसें लेक
र हकार पर्य्यंतउलटा पड
ना शंखको जलकरके पूर
णकरणा ॐसोममंडलाय
षोडश कलात्मने रामचंद्रा॰

ए ॐ पात्रायनमः इति संपूज्य
पृ इस मंत्रसे पूजनकरणा अंकु
१२ शमुद्रया गंगेच यमुने चैवे
13 त्यादि मंत्रेण अर्कमंडलात ती
र्थे मावाह्य सूर्यमंडलसे ती
र्थोका आवाहन करणा मू
लमंत्रं अष्टवारं पठेत अर्घ
दे जले विच राममंत्र षडंग
के अंगन्यास करणेसो कहेहै
तेनैवजलेन आत्माने चिप्र
हेत पात्रविषे अर्घ रक्षके

इसी जलकर तीनवारी सिं
चनकरणा दाशरथ्याय वि
महे सीता वल्लभायधीम
हि तन्नोरामः प्रचोदयात् ।
अर्थ इसकरके पूजादी वस्त
मभ सिंचन करणी पीठस्था
पिकोण पीठदे अग्निकोण
मे गंगणेशायनमः नैऋत
कोणमें दुं दुर्गायैनमः ।
इस करके वायुकोणमें क्षे
क्षेत्रपालायनमः ईशानको

ए
ष्ट
१५

14

णामे संसारख्यैनमः पीठ
स्याग्निकोणेधर्मायनमः ज्ञा
नायनमः नैर्ऋतकोणमें
वामंगे वैराग्यायनमः ईशा
ने ऐश्वर्यायनमः एवं अध
र्मायनमः दक्षिणे अज्ञानाय
नमः पश्चिमे अवैराग्याय
नमः उत्तरे अनैश्वर्यायनमः
अनन्तपद्मायनमः आनंदमय
कंदायनमः संविन्नालाय
नमः विकारमयकेसरेभ्योन

मः प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः
पंचाशद्वर्णकायै नमः ॐ अ
र्कमंडलाय नमः वं चंद्रमंड
लाय नमः ॐ अग्निमंडलाय
नमः मध्ये सं सत्वाय नमः
रं रजसे नमः तं तमसे नमः
ॐ आत्मने नमः ॐ अंतरात्म
ने नमः पं परमात्मने नमः
ज्ञानात्मने नमः आत्मतत्वा
य नमः मायातत्वाय नमः
कलातत्वाय नमः विद्यात

रे त्मायनमः परतत्वायनमः
१ अर्थ पहले कहेयो मंत्र इन्हों
१५ करके गंध अक्षत यंत्र विषे
15 देते जाना पहले अष्ट शा
क्तीः प्रपूजयेत अष्टदल वि
षे अष्टशक्तीयों का पूजन
करणा सो शक्तीयां कहे है
ॐविमलायैनमः ॐउत्कर्षि
ण्यैनमः ज्ञानायैनमः ॐक्रि
यायैनमः ॐयोगायैनमः
ॐप्रह्व्यैनमः ॐसत्यायैनमः

ॐ ईशानायैनमः ॐ अनुग्रा
हायैनमः ॐ नमो भगवते
विष्णवे सर्वभूतात्मने वासा
यनमः सर्वात्म योगयोग
पद्मपीठात्मनेनमः इति पी
ठे संपूज्य अथ इमककै
मारे पीठका पूजनकर्णी
देवमावाहयेत देवका आ
वाहनकर्णी हृदयात्सुषु
म्नामार्गेण ब्रह्मरंध्राच्च ना
सा रंध्रमार्गेण पुष्पांजला

रा वारोप्य पीठे पुष्पांजलिं निधा
ए य ॐ रां रामाय नमः ॐ आत्म
१९ मेस्य मत्रे शुद्धं नामहे पर
16 मेश्वर आराधन मिव ह्वांशे
मतीवावा ह्यामहे आवा-
हनी मुद्रा प्रदर्शयेत हृदय
में लेकर सुषुम्नानाडी मा
र्गसे मंजाटे पुष्पांजलि रख
णी फेर पीठका एजनदेया
र विषे रखणी रामचंद्र श्र
आगच्छात्र तिष्ठ मेरा सार्व।

णो ममपूजां गृह्णाण हेराम
वेद इस पूजामें आओ मेरी
पूजाको ग्रहणकरो ॐ रा।
रामायनमः नवेद्यं महिमा
मूर्ति स्सम्पन्नं सर्वंगं प्रभो
भक्तिस्नेह समाकृष्ट दीप
वत्स्थापयाम्यहं संस्थापि
त्वा स्थापयेत् मूलमन्त्रको
पठन् कुर्यात् आसने दीप
वेशनं अर्थ संस्थापिनीम
हाकरके स्थापनकरणी ।

रो
पृ
१२
17

सर्वान्तर्यामिने देव सर्व वी
जमयं शुभं स्वात्मस्थाय परं
शुद्ध मासनं कल्पयाम्यहं
इसकके आसनदेणा अ
स्मिन्वरासने देव सुखासी
नो ऽक्षरात्मक प्रतिष्ठितो भ
वेशात्वं प्रसीद परमेश्वर इस
मंत्रकके प्रणाम भगवान को
करणा मूलं अनन्या नव दे
वेश मूर्ति शक्ति रियं प्रभो
सान्निध्यं कुरु तस्मात्वं भक्ता

नुग्रह तत्पर संनिधान मुद्र
या संनिधाप्य इसका अर्थ
हे भगवान् मूर्ति शक्ति विशे
स्थित रहो आज्ञया तव देवे
श कृपां भोगे गुणं उगे आ
त्मानं टेक लमंत्रा निरुण
यिम पितगुरो संमुखी मुद्र
या संमुखी कुर्यात् मूले
संमुखी मुद्रा करके सन्मुख
करे अज्ञाना दुर्मनस्काय
वैकल्पा ल्साधनस्पर्च घट

दे पू १८ 18

पूर्णो भवेत्क्रतौ तद्यथाभि मु
खो भव प्रार्थितो मया मखे प्रार्थि
तो मुद्राककै प्रार्थनाकरी
दर्पापीठस्थ वार्षिन्या पूरय
यज्ञ विघ्नं नतोवा यत्तसं
म्यतः स्थितो भव महेश्वर म
खे श्रभक्तवोमन स्वतः श्री
वि हरापितप्रभोः स्वतेजः पं
जरेगाश्च वेष्टितो भव सर्वतः
सर्वगंधिन्या वगुंठना अमृतीकृ
ता यस्य दर्शन मिच्छंति देवा

स्वाभीष्ट सिद्धये तस्मैते पर:
मे न्याय स्वागतं स्वागतं च
मे महानुग्रह्या स्वागतं ततः
स्वागतं मूलं कृतार्थो नु
गृहीतोस्मि सफलं जीवितं
मम आगतो देवदेवेश स्वा
गत मिदंपुनः ग्रंथ उसकर्के
भगवानजीको आगमन
प्रार्थना करीपी ष्वमाके
विस्त्र कांतावा हवीपाद्यजः
लेहिपेत मूलं उसकर्के पाद्यदेना

रा पू १९

19

यज्ञक्रि लेशसंपको त्यरमात्ने
द विग्रह तस्मैते चरणाब्जाय
पाद्यं शुद्धाय कल्पये लवंग
जाति कंकोलंच आचमनीय
के पात्रे प्रक्षिप्यवक्ते आचम
नेदयात् लौंग जाफल के
कोल आचमनवाले पात्र
विषे इहे वस्तुपापकके भ
गवान जीके मुखमे आच
मन देणे वेधाना मपि वेधा
य देवानांदेवतात्मने आच

मंते कल्याणानीश भद्राणां
श्रुहिहितवे इति हवी तिल
दर्भाग्र सर्षपान् यव पुष्पाद
नाक्ष गंध अर्घपात्रे क्षिपेत्
इसकेके हवी तिल दर्भदे
शंकुर पैरश्रो यव पुष्प वा,
उल तिलक इहे वसते श्र
द्धे पात्र विषे पापककै श्र
द्धी मूहेंति क्षिपेत् मूलेन ।
मोकेन इसमेत्र करके श्र
वेदेणा सो कहेहै तापत्रय

रो
ए
२.
२०

ह्ने दिव्ये परमानंदलक्षणे
तापत्रय विनिर्मुक्त नवाघे
कल्पणाम्पदे इदे मंत्र ग्रंथे
देवेंद्रा मधुपर्के पात्रे दध्या
ज्य मधु लिपेत मधुपर्के
पात्रविधे मद्दा वेडो मवीर
मधुपर्के मत्व विधे दप इम
मंत्रकैर्के मूले सर्वकालक्ष
हीनाय परिपूर्ण स्वात्मने
मधुपर्कं मिदं देव कल्पया
मि प्रसीदमे इति प्रनराव

मते मूलेन श्लोकेनवा स्व
आचमन मंत्रकहेहै उक्ति
छोप्य अविवेषि यस्य स्मर
ण मात्रतः शुद्धि माभाति
नस्मै ते पुनराचमनीयके
स्नानवस्त्रोपवीत नैवेद्याने
आचमनीयं दद्यात् स्नान व
स्त्र यज्ञोपवीत निवेदके
अंतमे आचमन देने पाद्या
दि द्रव्या भावेन नेस्मरन
ननान् छिपेत् पाद्यसे ले

रो कर ना वस्त्र मिले तो केव
पृ ल चावलदेने ततः गंध तै॰
२१ लादिकं मूले मंत्रकहेहै
21
तैलका स्नेह गृहाण लोक
नाथ महाशय सर्वलोकेषु
शुद्धात्मन् ददामि स्नेह म॰
तमं हरिद्राद्यैः तडिहस्पैहा
पयेत हलदर मलनी फेर
स्नानकराणे परमानंद बोधा
द्वि निमग्नाजिनमूर्तये सं॰
गोपांग मिदं स्नानं कल्पया

ग्रह मीशते ततः गंधपुष्पो
दकै रीश मभिषिंचेत् मू:
लेन ततः वैश्वानरी यके
दद्यात् फेर धोती परण
ऊपरदेण मूले मायावि
त्र पदाक्षिन निजगृहेषु
तेजसे निरावरण विज्ञान
वासमे कल्पयामहे ३ ई
वरदेणें दामंत्र यमाश्रिम
महामाया जगतसे मोहिनी
सदा नमेते परमेश्वाय क

रो ल्ययास्तुत्तरीयके अंगोछा
ए देतेहा उपवीनभूषणानि
२२ प्रयच्छेत मूले यस्पशक्ति
द्रयेणोटे संषोन माविले ज
गत यज्ञसच्चायनसैमेते यज्ञ
सूत्रेप्रकल्पयेत इसकारके
यज्ञोपवीतदेतो स्वभाव ।
संदेगेगाय नानाशक्ता प्र
यायते भूषणानि विचित्रा
णि कल्पयाम्य मराविते
इसकारके भूषणदेते पर

मानंद सौभाग्य परिपूर्ण
दिगंतरे गृहाण परमं गंधं
कृपया परमेश्वर इति गंधं
तरीयवनसंभूतं नानागुण
मनोहरम् आमोद सौरभं
पुष्पं गृहाण मिट मन्नमं
तर्जनी अंगुष्ठयोगेन पुष्पमु
द्रां प्रदर्शयेत् अंगुष्ठके
समीप अंगुली मोतर्जनी
एवं एणं विधाय आवर।
णार्चनं कुर्यात् तद्यथा।

२ शिरसेस्वाहा रूं शिखायैवषट् रैं कवचायहुं रौं नेत्रत्रया
यवौषट् रः अस्त्रायफट् एवं षडंगं षट्कोणे पूजयेत् रामस्य
वामपार्श्वे श्रीसीतायै नमः स्वाहाः रामजीदे वामेपासे सीता
पूजन करणा पश्चिमे लं लक्ष्मणायनमः पश्चिमपासे लक्ष्मणदा पूजन
करणा

दक्षिणे भं
भरतायनमः
दहनेभरतपू
जन ॥२॥
उत्तरे

रो ए रर
23

पसे पूजा करके आवर्णा का
पूजन करणा सो कहे हैं रं
हृदयायनमः रीं [illegible] शं
शत्रुघ्नायनमः इसमे शत्रुघ्न
पूजन तनो भरतायः कोणे
विभीषणायनमः इसकर
के भरतजीदे अग्नेः कोणवि
षे विभीषणादा पूजनकर-
णा अग्नेकोणे हंहनुमतेन
मः इसमें अग्नेकोणविषे ह
नुमानजीदा पूजन करणा

रामभद्र महेष्वास सेतुकृ
द्रावणांतक भक्त्या समर्प
येत्अयं प्रथमा वरणार्चनं ।
तिसके अनंतर अष्टदल
कमलका अग्निकोणमे
लेकरके पूजन करणा ॐ
आत्मनेनमः ॐनिवृत्यैनमः
ॐअंतरात्मनेनमः ॐप्रति
ष्ठायैनमः ॐपरमात्मने
नमः ॐविद्यायैनमः ॐज्ञा
नात्मनेनमः ॐशांत्यैनमः

रा
ए
२५
24

ॐ रामभद्र महेष्वास सीता॰
कृद्रावणांतक भक्त्या मम
पियेतभ्यं द्वितीयावरणार्चे
नम् अष्टदलपत्रे अग्निको
ण मारभ्य पूजनं अष्टदलके
पत्रों विषे अग्निकोणसे ले
करके पूजन करणा ॐ वा
सुदेवायनमः ॐ श्रियैनमः
ॐ संकर्षणायनमः ॐ सरस्व
त्यैनमः ॐ प्रद्युम्नायनमः ।
ॐ प्रीत्यैनमः ॐ अनिरुद्धायन

मः ॐरत्नैनमः ॐरामभद्र
महेष्वास मेनकूढावणं
नेक भक्त्या समर्पये तुभ्यं
ट्तीया वरणावेन मिति
इन्हां मंत्राकके तीसरेआव
णाका पूजनकरणा तनोष्ट
दल पद्माग्रे फेर अष्टदल
के अगले भागविषे इन्हां
दा पूजन करणा सोकहेहै
ॐवागुरुनवेनमः ॐहयग्री
वायनमः ॐभरतायनमः

रा॰ ए॰ ५५ 25

ॐविभीषणायनमः ॐलक्
ष्मणायनमः ॐअंगदायन
मः ॐशत्रुघ्नायनमः ॐजां
बवतेनमः ॐरामभद्र मेरे
धाम सेवकू द्वावणोनक
भक्ता समर्पेते नम्ये चतर्था
वरणावेने हेरामचंद्र चउ
थे श्रावणोके पूजनका ग्रह
णकरो ततोष्टदले फेर अ
ष्टदलविषे ॐधृष्टयेनमः ॐ
जयंतायनमः ॐविजयायन

मः ॐ हराद्धायनमः ॐ राष्ट्र
वर्धनायनमः ॐ अकोपाय
नमः ॐ धर्मपालायनमः ॐ
सुमेत्रायनमः ॐ रामभद्रम
हेषाम सेतन्छद्दावर्णांतक
भक्त्या समर्पयेतन्भ्यं पंच
मावरणार्चनं हेरामचंद्र
पांचमे आवर्णका पूजनमे
अर्पणाकर्णाहा ननोष्टद ।
ले फेर अष्टदलमे पूर्वादि
पूर्वमे लेकर ॐ इंद्रायनमः

गो
पू
२९
26

ॐ अग्नये नमः ॐ यमाय
नमः ॐ नैऋतये नमः ॐ
अनंताय नमः ॐ वरुणा-
य नमः ॐ वायवे नमः ॐ
ॐ कुबेराय नमः ॐ ईशा-
नाय नमः ॐ ब्रह्मणे नमः
ॐ रामभद्र महेष्वास रावण
कुलावतंसक भक्तानसु-
मये मे मम पं ॐ मावरणा
पेनं हे रामचंद्र मे रक्षते
आवरणाका पूजन करणा

ह्रो नमः एवोदि एवंसें लो

कर आयुधपूजनं ॐ वज्रा

य नमः ॐ शक्त्यै नमः ॐ

दण्डाय नमः ॐ खड्गाय न

मः ॐ पाशाय नमः ॐ ध्व

जायै नमः ॐ गदायै नमः

मुसलाय नमः ॐ पद्माय

नमः ॐ चक्राय नमः ग.

मभद्र महेश्वास सेनक्तं.

द्रावणान्तक भक्त्या समर्प

ये तुभ्यं समस्ता वरणार्चनं

रा हे राम समसमा वरणकाय
ए हणकरो ततो द्वादशदले
२८ फेर द्वादशदलमें ऋषिए
जनकरणा ॐवसिष्ठायनमः
27 ॐवामदेवायनमः ॐजाबा
लिनेनमः ॐगौतमायनमः
ॐभारद्वाजायनमः ॐविश्वा
मित्रायनमः ॐवाल्मीकये
नमः ॐनारदायनमः ॐस
नकायनमः ॐसनंदनाय
नमः ॐसनातनायनमः ।

ॐसनत्कुमारायनमः ॐरा
मभद्र महेष्वास सेनत्कद्रा
वर्णानक भक्ता मर्पयेनभं
श्रष्मा वर्णार्चनं ततःषो
डशदले फेर षोडशदलवि
षे नीलादिकेंदा पूजनका
ॐनीलायनमः ॐनलायन
मः ॐसुषेणायनमः ॐमैं
दायनमः ॐद्विविदायनमः
ॐद्विविधायनमः ॐसरभा
यनमः ॐचंदनायनमः ॐ

रा
५
२८
28

गवाल्हायनमः ॐकिरीटाय
नमः ॐकुंडलाभ्यांनमः ॐ
श्रीवत्सायनमः ॐकौस्तुभा
यनमः ॐशंखायनमः ॐ
चक्रायनमः ॐगदायैनमः
ॐपद्मायनमः ॐरामभद्र म
हेष्वासमेतन्ब्रह्मावर्णानक
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमा
वरणार्चन हेराममें नवम
आवरणका पूजन तुमसाडेकैा
अर्पण करणाहो नतो हाति

शाहले फेर् वनरी दलविषे
एजन भुवसे लेकर् ॐभवा
यनमः ॐधराायनमः ॐसो
मायनमः ॐआपायनमः
ॐअनिलायनमः ॐप्रत्यूषा
यनमः ॐप्रभासायनमः ।
ॐअनलायनमः ॐवीरभ
द्रायनमः ॐशंभवेनमः ॐ
गिरीशायनमः ॐअजैकपा
देनमः ॐअहिर्बुध्नायनमः
ॐपिनाकिनेनमः ॐभवने

रा शायनमः ॐनीलकेशायन
९ मः ॐदिग्पतयेनमः ॐकप
२५ र्दिनेनमः ॐस्थाणवेनमः ।
29 ॐभर्गायनमः ॐब्रह्मणाय
नमः ॐसूर्यायनमः ॐवेदां
गायनमः ॐमानवेनमः ॐ
इंद्रायनमः ॐरवयेनमः ॐ
गभस्तयेनमः ॐयमायनमः
ॐहिरण्यरेतसेनमः ॐदि
वाकरायनमः ॐमित्रायन
मः ॐविष्णवेनमः ॐधात्रेनमः

ॐ रामभद्र महेष्वास मेतत्क्ष
द्रावणान्तक भक्त्या समर्पये
तुभ्यं दशमावरणार्चनं हे
राम दशमे आवरणका ए-
जन अर्पण करणाहं अभी-
ष्ट सिद्धिं मे देहि शरणागत
वत्सल भक्त्या समर्पये तुभ्यं
दशमावरणार्चनं आवाहना
दि सर्वैरुपचारैश्च पुष्पादिके
दत्वा करौ प्रक्षाल्य उपचारां
तरं आचरेत् समनीका वैवि

रो
पृ
३.
30

थे पुष्प जलदेकर्के हाथ धो
य कर्के और कार्यकरे पुष्प
पात्रे थंगारे प्रक्षिप्य अंगा
रोपरि अगुर्वादि प्रक्षिप्य फ
डिति प्रोक्षनम इति पुष्पं प्र
क्षिप्य वामतर्जन्या मेस्पर्श्ण
धूपं दयात मूले प्रग्निदे भांडे
विच प्रग्नि पापकर्के अगुरसे
लेकर सुगंधी वस्त्र छोडनी
फट् मंत्रसे प्रोक्षणनमः क
कै पुष्प पात्रे वामे हाथकी

तर्जनी अंगुष्ठे करके मुद्रा के
र धूपदेणा इस मंत्रसे सो क
हेहै वनस्पति रसो पेतो गं
धाढ्यः सुमनोहरः आघ्रेयः
सर्व देवानां धूपोयं प्रति गृ
ह्यतां सांगाय सपरिवाराय
रामाय धूपं समर्पयामिनमः
इतिधूपमंत्रः शंखोदकं भूमौ
क्षिपेत् शंखका जल थोडा
भूमि ऊपर छोडना तर्जनी
मूलयोरंगुष्ठयोगो धूपमुद्राः

रो धूपयेदिति ततः घंटां संघट्टये
पु त् जगध्वनि मंत्रमात्रः स्वाहे
३१ त्यनेनैव वाद्यघन्टामहस्तेन
31 देवतागुणान् कीर्तयन् द
क्षहस्तेन धूपयेत् देवताना-
भिदेशतएव पुष्पांजलिंदद्
यात् ईदृशं दीपदानमपि
शेयत्नं प्रयोगाश्च तद्वत् दी
पं वाम मध्यमयामुष्टेशात् प्र
थं कहेहे तर्जनी मंगुलीदा
मूल मंगुष्ठामेलकर धूपम्

द्रा दिषाना फेर वेटाका स्र-
वेन करणा वामे हाथसे घं-
टा वजाना देवताके गुणोंका
कीर्तनकरणा दहने हाथसे
धूपदेणा इहश्रो श्रैसेंही दीप
दानदेणा दीपको वामी श्रं
गुली श्रोर मध्यमाकर्के स्प
र्शीकरणा मंत्रः ऊँस्वप्रका-
शो महादीपः सर्वत स्तिमि
रापहः सबाह्या भ्यंतरं ज्यो
तिर्दीपोयं प्रतिगृह्यतो इति

रा दीपमंत्र: ॐरामाय सपरिवारा
पृ य रामाय दीपं समर्पयामि
३२ नमः मध्य मांगुष्ठयोगाभ्यां
32 दीपमुद्रां प्रदर्शयेत् अर्थ
मेंकाटली अंगुली फटा यो
गकर्कै दीपमुद्रा दिषावै
श्रीरामजीको दीपदानं नै
त्र देशनपव दीपदाननेत्रों
में दिषाणा ततो नैवेद्यं स
र्पयेत् फेर निवेदनेणा सु
र्णादि भाजने साज्यं पायसा

दि [illegible] शर्करादिकंच
सपरिवेष्य फडिति मंत्रितैः
जलैःप्रोक्षेत् स्ववर्णि चांदी
पित्तलदे भांडे विच निवेद दे
णा पायस शर्करादिकदे।
ए चक्रमुद्रां प्रदर्शयेत् वा
युबीजेन यं इति द्वादशवारे
चक्रमुद्राको दिखाणा वायु
बीजेकके नैवेद्यदोषं मेशो
ष्य स्वदक्षिणकरे अग्निबी-
जे दत्तकरपृष्ठे वामकरं द

ऐ त्वा नैवेद्यं प्रदर्श्य अग्निबीज
ए स्याग्निना नैवेद्यदोषं दग्ध्वा
३२ वामकरे अमृतं ध्यायेत् वा
33 ग्बीजसें निवेदनादोष सो
कना करणे आपने दहने हा
पीछे थके वाम हाथ देणा फेर नि
वेद दिषाणा अग्नि बीजसे ।
निवेदका दोष जलाना वा
मे हाथमे अमृतका ध्यान
करणा वामांगुष्ठेन नैवेद्य
भाजनं स्पृशेत् वामहृदेक

कैं निवेदटा भांडा स्पर्शकर
ण मूल मन्त्रवारं प्रजप्य मू
लमंत्रको ग्राटवारजपना
धेनुमुद्रां प्रदर्श्य देवछंष्टर
ना धेनुमुद्राको दिषापक
कैं देवस्योऽङ्गनं तेजः स्स्बा
वामं देवका तेज स्मरणक
र्णे वामंगुष्ठ नैवेद्यं मजल
दलहस्ले मूलश्लोक स्वाहांते
सांगायेति पठन् नैवेद्यमु.
द्रा प्रदर्श्येत वामाङ्गुष्ठाज

रा ल सहित दहना हाथसे नि
ए वेदयिषाणा मूले मन्यात्र
३४ सिहं महवि विविधानेक
34 भक्षणे निवेदयामि देवेशि
मातृगायत्रहाणनन् अना
मा मूलये रंगुष्ठयोगे नैवे
द्यमुद्रा हूःठा अनामिका यो
गसे विवेद्य मुद्राकोदिषाना
मपुष्य कराभ्यां पात्र मुद्रा
त्रिवेदया मीतिपठेत् पुष्य
हाथोमें लेकर पात्रउठाना

फेर कहना है मैंने विवेट
नकरा सोयहणकरो पद्म
मो वामहस्ते यास मुद्रा प्र
दर्शयेत् इसका कमलदी
न्याई वामहाथ कणे वाणी
वाली मुद्रा दिखाणी प्राणा
दि मुद्राः प्रदर्षनीया फेर
प्राण अपान समान व्यान
उदान है मुद्रा दिखाणीयां
ततः जवनिकाकृता इति
पठेत् अर्थ फेर पड़दा नै

रा
पृ
३५
35

वैद्यको करें है श्लोक पढ़
ने सो कहे है वलेशाद्यैः प
रित स्वरभिः स्वपविष्टैः सम
तैः लक्ष्मासिंवहलय कर
या सादरं वीज्यमानः नर्म
हेली प्रदमनमुखै व्यामुव
नंकिमध्ये भूंके पात्रे कन
क घटिते घट्टरसे श्रीरमेशः
शालीमकें समकें शिशिर
करसिते पापसास्वपमहपं ले
हे पेयंच चोक्तं मित ममस्त।

फलं दारिकाद्यं सखाद्यं स्रा
न्नं प्राज्यं सभोज्यं नयन कृ
चिकरं गजिकैला समेव ।
स्वादीयः शाकराजी परिक
र समस्ता हारजोघं ज्ञघसे
ति ततः जलं समस्तदेव दे
वेश सर्वेत्तमिकरं परं स्रवे
शानेद संहर्ते गृह्णाणजलः
मन्त्रमे इस मंत्र भगवानको
जलदिघाना ततः स्थंडिले
अग्निं उपाध्याय हवन माचरे

रो त मूलेन ईक्षणं प्रोक्षणं ।
ए प्रोक्षणं ऊर्ध्वैः ताडनं वर्म
२९ णा अभ्युक्ष्य अग्निं अग्निमंत्रे
36 ण एजयेदिष्टदेवता यत्र
समस्ताभिः आहुतीनां च
तर्पयेद्धुता ततः स्थंडिलवि
धे यत्र रक्षणी हवनकर्णी
मूलमंत्रमे देखणा अस्त्रक
कैं प्रोक्षणकर्णा ऊर्ध्वक।
कैं ताडनकर्णा वर्मसेसिंव
नकर्णा अग्निका अग्नि मंत्र

कर्के पूजनकर्णा इष्टदेवता
कें भिन्न भिन्न इकट्ठी सें ।
आहुती वारदेणीयो पंचवि
शति संख्या मन्त्रमूलेन जु
हुयात् ॥ ततः आहुतिभिर्हुता
मूर्तौ देवं नियोजयेत् ॥ अथ
इसका पंजी आहुती मन्त्रक
कें दफेर आहुतिं कर्के दू
वन फेर मूर्ति विषे देवता
स्थापनकर्णा ततः वह्निं वि
सर्जयेत्वाय आचमनो दकं

रा
पू
३७
37

दत्वा तदेव वक्त्रतः निर्गते
तेजः देवास्य संयोज्य ततः
फेर तिसते ग्रग्नका विसर्जे
न कर्णा देवमति आचमन
देणा देवमुखेते निर्गत यो
तेजसा देवमुखेमे शुक्र क।
र्णा तउच्छिष्ट नैवेद्यांशभोज
ने विष्वक्सेनाय निवेदयेत
ततः आरार्त्रिकं कुर्यात मूले
न अर्घ्य भगवानजीदा निवेद
विष्वक्सेनकोदेणा फेर आरति

करणी मूलमंत्रसे और मंत्रों
सें ततः तांबूलं निवेदयेत्
मूलेन ततः छत्रं धारयेत् त
तः चामरेण वीजयेत् ततो दे
वमनोभूत्वा कृतांजलिपुटेन
अथ तांबूल भगवानको देणा
छत्रचामरदेणा फेर उसविषे
मन लगाइ जउले हाथक
र विनतिकर भक्तिसे मूल
शुद्धिः सवासना क्षिमा दर्प
ण मंगलाविवमनो हरि ।

रो
ए
१८

38

विचित्रेति स्तवरूपेण प्रक
ल्पिता यतयोगीन रूपेण शा
स्त्रावाद्यं प्रभेदतः सूत्राणि
नवपद्यानि कल्पितानि यथा
प्रभो सुषुम्नाध्वजरूपेण प्राण
या चामरा मता अहंकारो
गजत्वेन वेगः स्तम्भो रथा
त्मना इंद्रियाणि स्वरूपाणि
शब्दादि रथवर्त्मना मनः प्र
ग्रहरूपेण बुद्धिः सारथि रू
पतः सर्वमस्य तथा स्तम्भं त

वोपकरणात्मना ततोगत्या
सं कृत्वा देवं ध्यात्वा मूलमंत्रं
यथाशक्तिः जपेत् अर्घ्यजले
करेकृत्वा अर्घ्यं इदं प्रार्थना
पढके देवका ध्यान मूलमे
त्रकाजपकरणे अर्घ्येदा जल
लेकर इदं मंत्र पढना सोक
हेहै गुह्यातिगुह्य गोप्तात्वं
गृहाणास्मत्कृतं जपं सिद्धि
र्भवतु मेदेव त्वत्प्रसादात्त्व-
यिस्थिताः देवता दक्षिणकरे

ते
प्र
३५
39

जपं समर्पयेत् अथ देवतादे
हाथमे जपदेदेणा ततो प्र
दक्षिणां परिवर्त्य शंखं पूजये
त् दंडवत्प्रणामश्चततः प्रद
क्षिणां कुर्यात् अथ शंखपा
त्रको परिवर्तनकर्के शंख
का पूजनकरणा दंडवत प्र
णामकरणी चारप्रदक्षिणा
करणीया ततः आत्मसमर्प
ण कृतांजलिः पठेत् आ
त्माका अर्पण करणा जउले

हाथकर विनती करिी ३
नः एवं प्राणबुद्धि देह धर्मा
धिकार जाग्रत्स्वप्न सुषुप्त्यव
स्थासु मनसा वाचा हस्ताभ्यां
पद्भ्यां मुदरेण शिश्ना यत्स्मृ
तं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं
रामचंद्रार्पणमस्तु स्वाहा
अर्थ इसने पहले प्राणोंक
र बुद्धिकर देहकर जाग्रत
सें लेकर तीन अवस्थामें
योकर मनसें बुद्धिसें हाथो

रा॰ सें पैरोंसे उदरसे शिश्नसे या
प॰ स्मरण करायो सोसभि श्री
५॰ राममें अर्पणहोए सोसदी
40 ये सकलं रघुनाथाय सम
र्पयेत् ओंतत्सदिति ततः सं
हारमुद्रया देवं स्वहृदि सं
हरेत् इतिशुभमस्तु शिवं
चास्तु इतिश्रीरामपद्धतिः
समाप्त शुभंभूयात् ॥